ॐ

सत्नाम साक्षी

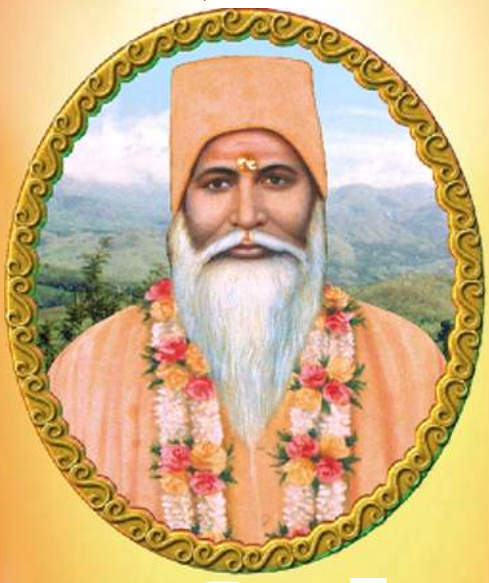

आरती संग्रह

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा व सद्गुरु सर्वानन्द चालीसा सहित

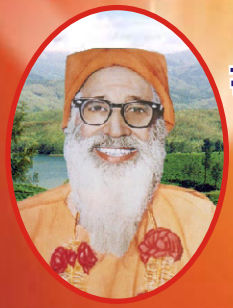

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम स्वरूप वर्णन

'टे' त्रिगुण स्वरूपाय,
'ऊँ' निर्गुण निरूपणे।
'टेऊँ' ब्रह्माभिधानाय,
नमस्तस्मै नमो नमः ।।

अर्थ

'टे' तीन गुणों के जो स्वरूप है, 'ऊँ' जो तीन गुणों से परे निर्गुण निराकार है, ऐसे ब्रह्मस्वरूप सत्गुरु टेऊँरामजी महाराज को हमारा प्रणाम है, प्रणाम है, प्रणाम है।

✻ प्रार्थना ✻

हे परमपिता समर्थ बाबा ! सच्चिदानंदघन ! परिपूर्ण परमात्मा ब्रह्माण्ड नायक ! सदा सुखदायक ! अविनाशी ! घट घट वासी ! स्वयं प्रकाशी ! सब सुख राशी ! सच्ची सुमति देना । स्वांग की लज्जा रखना । नगर बन में रक्षा कीजे। अभय दान प्रभु सबको दीजे।।

भगवत कृपा धार के, दर्शन दीना आज।
बाल रूप बन मात के, पूरन कीने काज।।

देश - परदेश दासों - बच्चों की रक्षा करना।
धर्म की लज्जा रखना। अपनी चलती चलाना॥
अन्तकाल सुहेली करना। तन-मन-धन वाणी करके।
मेरे द्वारा किसी की दिल दुःखी न होवे।
सिर धर आयुस करूँ तुम्हारा। परम धर्म ये नाथ हमारा॥
सुत अपराध करत है जेते, जननी चीत न राखत तेते॥
जैसेबालक भाव स्वभावे, लख अपराध कमावे।
कर उपदेश झिण के बहु भान्ती, बहुरि पिता गल लावे॥
सत्गुरु तुम पूरन करो, मेरी यह अरिदास।
कहे टेऊँ मन में कभी, रहेन जग की आस॥
आशवन्दी गुरु तोदरि आई, तुम बिन ठौर न काई।
तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाईं॥
पाइ पलउ मैं पेर पियादी, आयसि हेत मंझाईं।
तन मन धन अरिदास करेमैं, मांगत नामु सनेही॥
नामु तुम्हारा साबुन करिसां, धोसां पाप सभेई।
कहे टेऊँ गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाईं॥
ॐ शांति ! शांति !! शांति !!!

माता कृष्णा हृदय में, फूली नाहिं समाय।
संत जनो की प्रेम से, सेवा रही कमाय।।

माता कृष्णा प्रात उठ, चक्की रही चलाय।
बालक को निज ज्ञान की, लोरी रही सहाय।।

गुरू प्रार्थनाष्टक

१. परम पावन गुरु, तेरी हूं दावन गुरु,
आवन जावन गुरु, मेरा ही मिटाइये।
हम हैं अजान गुरु, आप हो सुजान गुरु,
आतम का ज्ञान गुरु, मुझको सुनाइये।
तरन तारन गुरु, करन कारन गुरु,
विघन टारन गुरु, बिगड़ी बनाइये।
कहे टेऊँ सत्गुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गरु, चरन लगाइये।।

२. परम दयाल गुरु, परम कृपाल गुरु,
परम उजाल गुरु, ज्योति को जगाइये।
सुन्दर सुचाल गुरु, नितही निहाल गुरु,
अमर अकाल गुरु, यम से बचाइये।
गोविन्द गोपाल गुरु, प्रभु प्रतिपाल गुरु,
राम रखपाल गुरु, बन्धन छुड़ाइये।
कहे टेऊँ सत्गुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

खिल्लू को जब ले चली, प्रबल सिन्धु की धार।
सत्गुरु टेऊँराम ने, तत्क्षण लिया उबार।।

३. परम उदारी गुरु, परम भण्डारी गुरु,
परम आधारी गुरु, नाम को जपाइये।
पर दुखहारी गुरु, पर सुखकारी गुरु,
पर उपकारी गुरु, हरि से मिलाइये।
नित अवतारी गुरु, शुभ गुणकारी गुरु,
कर रखवारी गुरु, ताप को जलाइये।
कहे टेऊँ सत्गुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु , चरन लगाइये।।

४. शाहन के शाह गुरु, सच्चा पातशाह गुरु,
बिन परवाह गुरु, विपत्ति हटाइये।
बेवाहन वाह गुरु, बेराहन राह गुरु,
गुणनि अथाह गुरु, मारग बताइये।
दया के दर्याह गुरु, दोषनि के दाह गुरु,
बख़श गुनाह गुरु, मोहि न भुलाइये।
कहे टेऊँ सत्गुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

निर्गुण पूरण पारब्रह्म, जो सत्चित सुखधाम।
कृष्णा के घर प्रकटिया, बालक टेऊँराम।।

सद्गुरु के युग चरण की, सेवा कर निष्काम।
स्वामी आसूराम से, मंत्र लिया सुखधाम।।

५. राजन के राज गुरु, सन्त सिरताज गुरु,
महा महाराज गुरु, मोहि अपनाइये।
गरीब निवाज़ गुरु, राखो मेरी लाज गुरु,
पूरे कर काज गुरु, अज्ञान उड़ाइये।
भवजल पाज गुरु, सुखनि समाज गुरु,
तारक जहाज गुरु, भव से तराइये।
कहे टेऊँ सत्गुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

६. ब्रह्म के स्वरूप गुरु आतम अनूप गुरु,
अमल अरुप गुरु, द्वन्द्व को गलाइये।
अगम अगाध गुरु, अमर अबाध गुरु,
अचल अनाद गुरु, अभेद बनाइये।
देवनि के देव गुरु, अलख अभेव गुरु ,
अटल अखेव गुरु, स्वरूप लखाइये।
कहे टेऊँ सत्गुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

जितनी विद्या जगत की, सो सब अविद्या रूप।
तांको तज इक ओम का, स्मरण करो अनूप।।

भजन सार संसार में, जब उपजा मन ज्ञान।
शहर छोड़ एकान्त में, करने लगे हरि ध्यान।।

७. पूरन सुज्ञानी गुरु, पूरन सुध्यानी गुरु,
पूरन सुदानी गुरु, प्रेम को पिलाइये।
शरन पालक गुरु, संकट घालक गुरु,
मेरे हो मालिक गुरु, दरस दिखाइये।
करुणा निधान गुरु, सद्महिरवान गुरु,
करले कल्यान गुरु, सुमति सिखाइये।
कहे टेऊँ सत्गुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु चरन लगाइये।।

८.निओटन ओट गुरु, काटो भ्रम कोट गुरु,
मेटो जम चोट गुरु, पापनि पलाइये।
वीरनि के वीर गुरु, धीरनि के धीर गुरु,
पीरनि के पीर गुरु, शान्ति में समाइये ।
तुम धन धन गुरु, मैं हूं तेरा जन गुरु,
मारे मेरा मन गुरु, दोषनि दलाइये।
कहे टेऊँ सत्गुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

सच्चा सौदा नाम का, झूठा सब व्यवहार।
नाम जपे चलता रहे, जग का कारोबार।।

पीछे अपना काम कर, पहले कर उपकार।
सब का घर भरवाय कर, तब लीनो जलधार।।

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा

प्रथमे हरिहर ब्रह्म को, बार बार प्रणाम।
नर तन धर त्रिदेव जो, होया टेऊँराम।।
तप्त धरा मरुदेश में, मेघ देत सन्देश।
त्यों जग के कल्याण हित, हरि धारै नर भेष।।

सिन्ध देश की महिमा भारी, बार-बार ऋग्वेद उच्चारी।
सिन्धुतीर पावन प्रसंगा, बहती जहां ज्ञान की गंगा।।
ऋषी मुनी अरु ज्ञानी ध्यानी, पढ़ते जहां ब्रह्म की बानी।
धन्य सिन्ध की धरती सारी, धन्य सिन्ध के नर अरु नारी।।
समय बड़ा प्रबल प्रवीना, वेद पुराणनि वर्णन कीना।
काल चक्र दुस्तर अति भारा, आ अधर्म ने पांव पसारा।
धर्म कर्म भूले नर नारी, पाप कर्म में वृत्ति धारी।।
गीता में श्री कृष्ण सुनाया, जब जब भार भूमि पर आया।
तब तब ही अवतार धरूं मैं, सत्यधर्म की विजय करूं मैं।।
प्रण पालन हित ले अवतारा, आए खण्डू नगर मंझारा।
चेलाराम के आंगन मांही, खुशी भई सब के मन माहीं।।
कृष्णा मां को दरश दिखाया, चतुर्भुजी निज रूप पसाया।
शुक्ला तिथि षष्ठम आसाढ़े, प्रकट भए सब काज संवारे।।
शनिवार का दिवस सुहाना, शशि सम चमकत रूप जहाना।
लोली दे दे मात लुडावे, गद् गद् गीत कण्ठ से गावे।।
बालक वय से हरिगुन माहीं, प्रीत लगी प्रभु सुमरन माहीं।
विद्या हेतु जब उन्हें पठाया, सत्गुरु आसूराम तहं पाया।।
गुरु बोले हो स्वयं सिद्ध तुम, परिपूर्ण हो ब्रह्म शुद्ध तुम।
बैठ एकान्त में ध्यान लगाया, सहज समाधि के सुख को पाया।।
खान पान जग विषयों माहीं, रंचक मन कहं लागत नाहीं।

मजदूरी करके लिया, इकतारे का साज।
भूल न किससे मांगिये, कैसा भी हो काज।।

इक बुढ़िया के द्वार पर, पड्यो देख मृत श्वान।
छाडयो जा दरियाह में, सब में लख भगवान।।

लगन लगी गुरु शब्द मंझारी, टूटी मोह कोह की जारी।।
बालक गण को साथ बिठाये, राम नाम की धुनी लगाए।
इक दिन सिन्धू नदी किनारे, बालक गये नहाने सारे।।
वस्त्र उतार तट पर रख दीन्हा, टेऊँराम के सुपुर्द कीन्हा।
बालक जल में खेलन लागे, खिल्लू था उन सब में आगे।।
खेलत खेलत खिल्लू डूबा, सबने देखा बड़ा अजूबा।
वस्त्र सहित गुरु जल के माहीं, कूदे लुप्त भए फिर ताहीं।।
बालक भय से रोअन लागे, समाचार देवन कुछ भागे।
शोकाकुल आये नर नारी, चमत्कार देखा इक भारी।।
खिल्लू अपनी गोद उठाये, सत्गुरु जी तब बाहर आये।
अद्भुत ऐसा देख निजारा, विस्मित भया नगर तब सारा।।
खिल्लू कहा सुनो हे भाई, डूब गया जब मैं जल माहीं।
सुन्दर देव वहां दो आए, पकड़ा मुझे, वरुण ढिग लाए।।
इतने में टेऊँराम पधारे, तांको देख प्रसन्न भए सारे।
अभिवादन वरुण तब कीन्हा, निज सम्मुख ही आसन दीन्हा।।
कहन लगे कुछ सेव बताएं, बोले खिल्लू लेन हम आए।
प्रसन्न हो तब दीन्ह विदाई, सत्गुरु ने मम जान बचाई।।
धन्य धन्य गुरु टेऊँरामा, परम पवित्र तुम्हरा नामा।
जय हो हे गुरुदेव तुम्हारी, सुख सागर तुम अति हितकारी।।
स्वर्ण आग संग मल ज्यों त्यागहिं, लेवत नाम पाप त्यों भागहिं।
तप्त बुझावत हैं चन्द ज्यों, शीतल हृदय करत नाम त्यों।।
इच्छित वस्तु कल्पतरु देवे, नाम सुमरते सब फल सेवे।
अब तो सत्संग की धुनि लागी,मन की माया ममता त्यागी।।
डंडा झांझ लिया यकतारा, बाजा तबला साज प्यारा।
गली गली में धूम मचाई, कृष्ण जैसे रास रचाई।।
प्रेम बढ़ा जब खण्डू माहीं, गुरु सोचा यहां रहना नाहीं।

भगवत की कृपा भई, संत पधारे धाम।
भये प्रफुल्लित हृदय में, सद्गुरु टेऊँराम।

जिते सुख संसार के, तेते सेवा माहिं।
भोजन पावें संत जन, आप जिमावे ताहि।।

नाम कीर्ती जय जयकारा, इन बातों से सन्त न्यारा।।
यह विचार कर बिना बताए, जंगल में कुछ दिवस बिताए।
आसन वहां जमाया स्थिर, हिंसक जन्तू का था ना डर।।
खोज खोज प्रेमी वहं आए, लौट चलें सबने समझाए।
थिर आसन निश्चल मन ठाना, कहा अभी फिर लौट न जाना।।
घास फूस तृण कुटी बनाई, कन्द मूल खा जान सुखाई।
गुरुमंत्र का कर अभ्यासा, मेट दई जम की सब फासा।।
आतम अन्तर वृती लागी, जगत वासना सकली भागी।
पावन भूमी वह जग माहीं, हरिजन करत तपस्या जाहीं।।
तिस भूमी की रज सिर लावत, गिरिजा को कह शंभु सुनावत।
तीर्थ सम वह पूजन जोगी, जहं जहं नाम जपत है योगी।।
धन्य धन्य है सो अस्थाना, अमरापुर है उसका नामा।
अमरापुर स्थान अमर है, दर्श करे सो फेर न मर है।।
चार धाम सम पवित्र धामा, अमरापुर है उसका नामा।
तांकी महिमा कही न जाई, शेष शारदा पार न पाई।।
बैठ जहां गुरु ज्ञान सुनाया, सत्नाम साक्षी मंत्र जपाया।
प्रेम प्रकाशी पंथ बनाया, सोए जीवों को था जगाया।।
जब तक गंग यमुन का पानी, तब तक अमर रहेगी कहानी।
सूर्य चन्द्र प्रकाश हैं जौं लौं, नाम प्रकट जग में तव तौं लौं।।

अमर देश से आगमन, अमर देश प्रस्थान।
अमरापुर वाणी अमर, अमरापुर स्थान।।
आप अमर चरित्र अमर, अमर आपका नाम।
तव शरनागत भी अमर, धन गुरु टेऊँराम।
साधु सन्त सब पूज्य हैं, सबको है प्रणाम।
स्वासों में पर रम रहे, सत्गुरु टेऊँराम।।
चालीसा गुरुदेव की, पढ़े सुने जन जोय।
श्रद्धा मन में जो धरे, मुक्ती पावे सोय।।

मैं निकरियो घर सुन, इक द्वार खडी बुढ़िया महतारी।
जो मृत श्वान के काज हरीजन, सो विनती करे थकहारी।।

मांगत दाम हरीजन जो वह दे, नहीं पाय गरीब बिचारी।
मोसों कही हम काढ़ लियो, हरी नाम महातम जानके भरी।।

सर्वानन्द चालीसा

पूरण पार ब्रह्म को बार बार है वन्द ।
सर्वानन्द बन सर्व को दीना सर्वानन्द ।।
आनन्द अमृतलोक का आए बांटन काज।
अमर देश से सतगुरु सर्वानन्द महाराज ।।
एक गुरु की ओट ली एक गुरु आधार ।
एक भाव से भक्ति कर हो गए भव से पार ।।
इष्टराम के शंभु है शंकर के हैं राम ।
स्वामी सर्वानन्द के सत्गुरु टेऊँराम ।।
वशिष्ठ गुरु हैं राम के सांदिपनि गुरु श्याम ।
स्वामी सर्वानन्द के सतगुरु टेऊँराम ।।
सत्गुरु ब्रह्म स्वरूप है सत्गुरु है महादेव ।
विष्णु रूप गुरु जान के ताँकी कीनी सेव ।।
इष्ट गुरु भगवान सब सत्गुरु टेऊँराम ।
पूर्ण श्रद्धा भाव से बार बार प्रणाम ।।

सिन्धु देश में सुन्दर ग्रामा
भिट्टशाह है तांका नामा
तां में रहते सेवकरामा
तां घर आए गुरु सुखधामा
ईश्वरी देवी मात प्यारी
भगवत भक्ती करत न्यारी
गोद पवित्र तांकी कीनी
मन की दुविधा सब हर लीनी
देख देख के मोहक रूपा
हर्षी मात देख स्वरूपा
सुन्दर भजन सुनावन लागी
लोरी दे दे गावन लागी

खण्डू जल से घिर गया, विकाल भये नर–नार।
वरूण देव से विनय कर, सत्गुरु लियो उबार।।

चेलाराम नाना सुखदाई
नानी तांकी कृष्णा बाई

दे आशीष दुलारन लागे
मीठे वचन उच्चारन लागे

दव्य तेज मुख ऊपर चमके
दामिनि नभ में जैसे दमके

शान्त एकान्ती धीरजधारी
बालक सुख देता सुखकारी

बचपन से मन विषयों माहीं
एक निमष भी अटका नाहीं

ज्यों ज्यों आयू बढ़ने लागी
त्यों त्यों उपशम वृत्ती जागी

खान पान पहरन के माहीं
रंचक वृत्ती लगती नाहीं

बालक का यह देख स्वभावा
मात हृदय अति दुख को पावा

ले बालक निज मैके आई
आकर बालक दशा बताई

घर में भक्ति भाव था भारी
सत्संग की वर्षा सुखकारी

सत्गुरु टेऊँराम का दर्शन
करके मन होया अति प्रसन्न

बैठ चरण में शीश झुकाया
सतगुरु शरन आपकी आया

भव जल दुस्तर भगवन् भारी
अब तो लीनी ओट तुम्हारी

कृपा कर निज दास बनाओ
नाम दान दे मोहि जगाओ

जग के विषय भोग दुखदाई
तां में सूख न देखा राई

सतगुरु सिर पर हाथ घुमाया
नाम दान दे शिष्य बनाया

नाम की मणी अमोलक पाई
वृत्ती सत्गुरु शब्द समाई

तन से सेवा मन से सुमिरन
इस विधि बीतन लागा जीवन

गुरुकृपा से भया प्रकाशा
अविद्या तम का भया विनाशा

वाणी भी अब बरसन लागी
नाम जपाया हरि अनुरागी

गांव गांव में हरि गुन गाया
प्रेम प्रकाशी ध्वज झुलाया

गुरु आज्ञा ले तप के कारन
ऋषीकेश में कीना आसन

झाड़ी सुन्दर एक बनाके
तांमें बैठे ध्यान लगाके

अल्पाहारी निंद्रा जीती
पूरण लाई गुरु से प्रीती

सुन्न मण्डल में लाय समाधी
पाया आतम सूख अनादी

तजकर घर परिवार को, बैठा जा श्मशान।
हरि भक्ति में लीन हो, याद किया भगवान।।

माया आए मोहने, धार मोहिनी रूप।
जान लिया गुरदेव ने, महिमा अमित अनूप।।

गुरुमंत्र से मन को जीता
हर्ष शोक से भया अतीता

गुरु महिमा निशिवासर गाए
अविद्या नीन्द से सबहिं जगाए

महा प्रयाण सत्गुरु जब कीन्हा
पंच भूत तन को तज दीन्हा

आसन सब मिल इन्हहिं बिठाए
यश कीर्ति सत्गुरु प्रगटाए

भया विभाजन भारत का जब
जयपुर आ स्थान किया तब

तीन लोक प्रसिद्ध महाना
यहां बना सुन्दर अस्थाना

अमरापुर स्थान नाम है
अमृतमय सो अमर धाम हैं

प्रतिमा गुरु की और समाधी
दर्शन से ही कटे व्याधी

उन्नत ध्वजा प्रेम प्रकाशी
परिक्रमा से कटे चौरासी

ग्रंथ प्रेम प्रकाश छपाया
गुरुवाणी को अमर बनाया

धन्य धन्य गुरु सर्वानन्दा
दर्शन से पाइए आनन्दा

सर्वानन्द नाम जो गावे
भवसिन्धु से शीघ्र तर जावे

एकदेशी नहीं एकानन्दा
सर्वानन्द सर्व आनन्दा

अल्पकालिक नहीं अल्पानन्दा
सर्वानन्द सर्व आनन्दा

स जानो सच्चिदानन्द रूपा
रमता राम र सर्व अनूपा

वा वायू के बीच समाया
न नारायण बन जग जाया

दीन दयाल द दे आनन्दा
जय जय जय गुरु सर्वानन्दा

धनहर गुरु जग बहुत हैं मनहर जग में चन्द ।
मनहर मन मोहन मिला सत्गुरु सर्वानन्द ।।

आत्मानन्द अखण्ड सो स्वयं सच्चिदानन्द ।
परमानन्द मय आप सो सत्गुरु सर्वानन्द ।।

सर्व शिरोमणि सन्त हैं सदा देत आनन्द ।
किन्तु हमारे मन बसे सत्गुरु सर्वानन्द ।।

गुरु चालीसा गाय जो नित निष्ठा के साथ ।
सत्गुरु के तिस दास को यम न लगावे हाथ ।।

निज कर कुटी बनायली, कीनी तपस्या घोर।
भान नहीं कुछ समय का, सांझ भयी या बोर।।

लक्ष्मी नारायण खड़े, धर अंग्रेजी भेष।
किसने आग लगाई है, कहो हमारे दरवेश।।

शान्ति के दोहे

१. भक्त वत्सल भय हरन हरि, करुणा शील निधान।
कह टेऊँ कलि काल में, लाज राख भगवान।।

२. हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीन बन्धू दातार।
कह टेऊँ कृपा करे, दे शुभ गुणन भण्डार।।

३. मैं मांगत नहिं और कछु, सन्त दरस हरि देह।
कह टेऊँ दर्शन करे, सफल करूँ तन एह।।

४. इन्द्रराज वैकुण्ठ सुख, नहिं मांगूं धन धाम।
कह टेऊँ मुझ दीजिये, हे हरि अपना नाम।।

५. जितने कणके रेत के, उतने अवगुण मोहि।
कह टेऊँ गुरु बख़्शले, शरण पड़ा हूँ तोहि।।

६. सद्गुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास।
कह टेऊँ नित सुमति दे, सन्तन माहिं निवास।।

७. सत्गुरु तुम पूरन करो, मेरी यह अरिदास।
कह टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस।।

८. सत्गुरु आतमज्ञान दे, हरो देह अभिमान।
कह टेऊँ सब घट विषे, दिखलाओ भगवान।।

९. रे मन राखो राम में, पूरण तुम विश्वास।
कह टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुख नास।।

१०. राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरनि ले, खोलो अपना भाग।।

११. चिन्ता भोजन वसन की, टेऊँ करते काहिं।
हरि विश्वम्भर दे सबहिं, क्या तुम देवहिं नाहिं।।

१२. उदर भरन के कारने, भटकत काहिं अजान।
त्यागे चिन्ता पेट की, सुमरो श्री भगवान।।

कूप नीर जब चुक गया,
भक्तनि करि उपकार।
सत्गुरु छीन्टा मार तब,
कीनी जय-जय कार।।

१३. कहे टेऊँ संसार में, बात यही है सार।
भजन करो भगवान का, छोड़ो विषय विकार।।
१४. कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक।।
१५. मात गर्भ में तुम किया, हरि से जो इकरार।
कह टेऊँ तिहं याद कर, सुमरो सत्कर्तार।।
१६. मन बुद्धि इन्द्रिय प्राण धन, जिहं दीनी नर देह।
कह टेऊँ तिस राम का, नित सुमरन कर लेह।।
१७. पूर्व पुण्य ते पाइया, मानुष का अवतार।
कह टेऊँ तिहं सफल कर, सुमरे सृजणहार।।
१८. चौरासी लख योनि का, मानुष है सिरताज।
कह टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज।।
१९. ग़फ़्लत में न गंवाइये, मानुष देह महान।
कह टेऊँ तुम जागके, भज ले श्री भगवान।।
२०. कह टेऊँ तुम चेतले, अब कछु बिगड़ी नाहिं।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि सुमरो मन माहिं।।
२१. सोए अविद्या नींद में, कह टेऊँ बहु काल।
अब तो ग़फ़्लत छोड़ के, सुमरो दीन दयाल।।
२२. हरि सुमरो तुम जाग के, सोय न निद्रा माहिं ।
कह टेऊँ जागे बिना, हरि दर्शन दे नाहिं।।
२३. अमृत वेले ऊठ के, छोड़ कल्पना काम।
कह टेऊँ हरि ध्यान धर, सुमरो गुरु का नाम।।
२४. प्रात:काल जो ऊठ के , करत हरी गुण गान।
कह टेऊँ सो जगत में, होवत संत सुजान।।

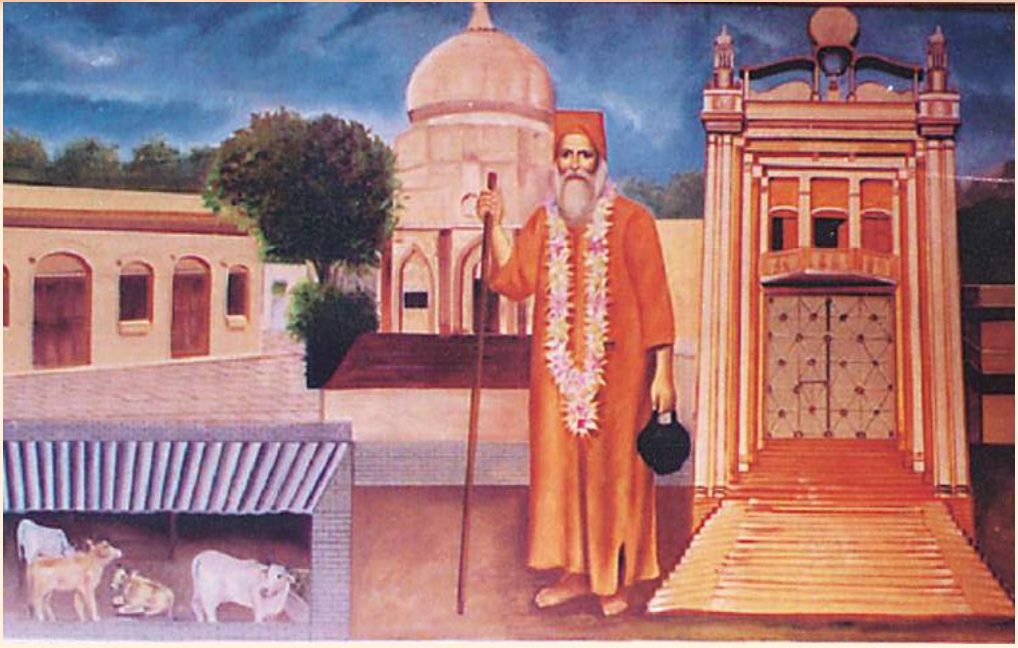

अब तो अमरापुर बनी, अद्‌भुत आलीशान। जांके दर्शन करते ही, आनन्द होया महान।।

२५. निशदिन कर शुभ भावना, हरि को जान हज़ूर।
कह टेऊँ मन से करो, अशुभ भावना दूर।।
२६. नीच ऊँच निर्धन धनी, सब में लख कर्तार।
कह टेऊँ शुद्ध भाव से, सबका कर सत्कार।।
२७. बुरा भला निज भाव ही, सबको सुख दुख देत।
कह टेऊँ दे और नहिं, फलत भाव का खेत।।
२८. बुरा किसी का ना करो, सबका भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार।।
२९. कल्प वृक्ष है आत्मा, कह टेऊँ सब माहिं।
जांकी जैसी भावना, तैसा फल दे ताहिं।।
३०. मन पर साक्षी होय तुम, धर विवेक वैराग।
कह टेऊँ जे दोष है, तांका करो त्याग।।
३१. थोरे जीवन हेत तुम, करो न पाप अजान।
कह टेऊँ मन जीत कर, पुण्य करो प्रधान।।
३२. निश्चल मन से मिलत है, निश्चल आतम राम।
टेऊँ मन निश्चल करे, पाओ सुख का धाम।।
३३. इष्ट देव भगवान की, करे उपासन जोय।
कह टेऊँ तिस मनुष्य का, निश्चल शुद्ध मन होय।।
३४. कर्म धर्म जप ध्यान तप, योग यज्ञ व्रत दान।
कह टेऊँ हरि हेत कर, छोड़ ममत अभिमान।।
३५. जप तप सेवा कर्म शुभ, तीर्थ दान स्नान।
श्रद्धा बिन फल देत नहिं, कह टेऊँ सत् मान।।
३६. प्रेम बिना पहुँचे नहीं, को जन हरि के धाम।
कह टेऊँ तांते जपो, प्रेम सहित हरि नाम।।

३७. प्रेम भाव से होत वश, भक्त वत्सल भगवान।
कह टेऊँ तांते करो, हरि से प्रेम प्रधान।।
३८. जिन–जिन हरि के प्रेम में, दीना तन मन प्रान।
टेऊँ तिन के कदम पर, झुक–झुक पड़त जहान।।
३९. बेमुख हो कर्तार से, करत जगत से प्यार।
कह टेऊँ तिस मनुष का, कबहुँ न होत उदार।।
४०. संत गुरू परमात्मा, साचे संगी जान।
कह टेऊँ इन तीन से, करले प्रेम सुजान।।
४१. हरि मेली हैं सन्त जन, हरि से देत मिलाय।
कह टेऊँ छोड़त नहीं, जो जन शरनी आय।।
४२. जैसे जल में रहत है, अहनिश कमल अलेप।
कह टेऊँ तिमि जगत में, संत रहत निर्लेप।।
४३. संत राम में भेद नहिं, संत राम स्वरूप।
कह टेऊँ रट राम को, भये राम के रूप।।
४४. स्वार्थ बिन सेवा करे, सबको दे सन्मान।
टेऊँ समता में रहे, सोई संत पछान।।
४५. जग में जीते जो मरे, तजे देह अभिमान।
कह टेऊँ संसार में, सो नर मुक्ता मान।।
४६. जीवित जग में मरत जो, तां पर छत्र झुलंत।
टेऊँ जग तिहं पूजते, जान रूप भगवंत।।
४७. क्षमा जांके मन बसे, तिस हरि अंतर नाहिं।
कह टेऊँ सुर नर सभी, दर्शन चाहत ताहिं।।
४८. क्रोध त्याग क्षमा धरे, सो है पूजन योग।
कह टेऊँ तिहं दरस ते, मिट जावत सब रोग।।

४९. कली काल में कठिन है, योग यज्ञ तप ध्यान।
साधु संग हरि नाम से, टेऊँ हो कल्यान।।
५०. संत समागम सम नहीं, साधन को जग माहिं।
कह टेऊँ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नाहिं।।
५१. पार करत भव सिन्धु से, सत्संग परम जहाज़।
कह टेऊँ तामें चढ़ो, छोड़ जगत की लाज।।
५२. सत्संग से सत्गुरु मिले, सत्गुरु से निज ज्ञान।
कह टेऊँ निज ज्ञान से, मिल हैं पद निर्बान।।
५३. सत्गुरु बुद्धि के नैन में, डारे अंजन ज्ञान।
कह टेऊँ तम भ्रम हर, दिखलावे भगवान।।
५४. कह टेऊँ भगवान से, सत्गुरु अधिक पछान।
कर्मों का फल देत हरि, गुरु दे मुक्ति दान।।
५५. गुरु बिन रंग न लागहीं, गुरु बिन ज्ञान न होय।
कह टेऊँ सत्गुरु बिना, मुक्ति न पावे कोय।।
५६. पूरन सत्गुरु देव से, पूरन ले उपदेश।
कह टेऊँ तिहं सुमर के, पाओ पूरन देश।।
५७. सर्व व्यापक जान हरि, सबकी करिये सेव।
कह टेऊँ सब पाप हर, देखो आतम देव।।
५८. ब्रह्म आतमा एक है, सत्चित् आनन्द रूप।
कह टेऊँ ज्ञानी जिसे, जानत निज स्वरूप।।
५९. साक्षी चेतन ब्रह्म का, सब घट में है वास।
कह टेऊँ शशि सूर्य में, तांका है प्रकाश।
६०. साक्षी चेतन रम रहा, जल थल पुनि आकाश।
कह टेऊँ तिहं जान के, पाओ सुख अविनाश।।

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

सद्गुरु टेऊँरामाष्टकम्

१. निश्शोकमानं गतरागद्वेषं, ज्ञानैकसूर्यं जगदेकवन्द्यम्।
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकामं, श्री टेऊँराम शरणं प्रपद्ये।।
२. यदा हि देशे यवनं प्रकोपात्, सिन्धोस्समीपे बत धर्म हानिम्।।
जनाञ्च सर्वान् व्यथितान् विलक्ष्यः श्री टेऊँरामेण धृतोऽवतारः।।
३. सुरक्ष्य धर्मं त्ववतीर्य भूमौ, प्रजासु व्याप्तञ्च विधर्मी धर्मम्।
विनाशाय तं मण्डल मण्डितेन, प्रकाशितः प्रेम प्रकाश मार्गः।।
४. अष्टांगयोगे च समाहिताय, लोकोपकारे कृतनिश्चयाय।
तद् ब्रह्मतत्वे परिनिष्ठिताय, श्री टेऊँरामाय नमः शिवायः।।
५. शिष्टैश्च सर्वै परिपूजिताय, स्वर्गाधिपतयेऽपि च निःस्पृहाय।
कामादि षड्वर्ग जिताय तस्मै, श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय।।
६. योगीन्द्र वृन्दैः छरिसेविताय, भक्तार्तिनाशे कृतनिश्चयाय।
सर्वात्म भावे परिनिष्ठताय, श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय।।
७. पूर्णेन्दुशोभा परिपूरिताय, शुद्धाय शान्ताय गतस्पृहाय।
भस्मीकृताऽशेष निबन्धनाय, श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय।।
८. भक्तेश्च मार्गस्य निदर्शकाय, प्रेम प्रकाश मण्डलोद्भवाय।
आचार्य वर्याय वशेन्द्रियाय, श्री टेऊँरामाय नमः शिवाय।।

ध्वज वन्दना

टेकः हम गीत सनातन गाएँगे, नित ध्वजा धर्म झुलाएँगे।
१. धर्म सनातन ईश चलाया, राम कृष्ण ऋषि मुनि मन भाया।
पूर्व पुण्य से हमने पाया, लगन इसी से लाएँगे।।
२. धर्म सनातन आदि हमारा, जिसके आशय अनन्त अपारा।
वेदों ने इस भांति पुकारा, तिसको नाहिं भुलाएँगे।।
३. धर्म सनातन को हम धारे, भेद भ्रान्ती भ्रम निवारे।
ऊँचे स्वर से कह जयकारे, सोते जीव जगाएँगे।।
४. सर्व धर्म का है यह स्वामी, सर्व व्यापक है सुखधामी।
कहे टेऊँ दे मुक्ति मुदामी, तांको सीस निवाएँगे।।

सद्गुरु श्री सर्वानंदाष्टकम्

१. सर्वज्ञं सद्गुरुं देवं, सर्व जीव हिते रतम्।
अज्ञानाद्ध्वान्त विध्वसं, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।
२. ब्रह्मज्ञं सर्व धर्मज्ञं, ब्रह्मचारि व्रते स्थितम् ।
क्रियावन्तं परं धीरं, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।
३. तपस्विनं सुसिद्धं च, शिष्य सन्ताप हारकम् ।
सर्वेषा ज्ञान दातारं, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।
४. ज्ञान विज्ञान सम्पन्नं, सर्व ताप विनाशकम् ।
रक्षकं सर्व धर्माणां, सर्वानन्दं नमाम्यहम् ।।
५. प्रेम प्रकाश मण्डलः, रक्षार्थ धृत विग्रहम् ।
सर्व स्वरूपं सर्वेशं, सर्वानन्दं नमाम्यहम्।।
६. पूर्णज्ञान समायुक्तं, जगदज्ञान नाशकम् ।
परे ब्रह्मणि निष्णांत, सर्वानन्दं नमाम्यहम्।।
७. गत्वादेश विदेशे च, सत्य धर्म प्रचारकम्।
अध्यात्म ज्ञान सम्पन्नं, सर्वानन्दं नमाम्यहम्।।
८. निर्मानं निर्भयं चैव, द्वंदातीतं तथैव च।
निःसंगं निर्मलं चैव, सर्वानन्दं नमाम्यहम्।।

सद्गुरु सर्वानन्द महिमा

१. सर्वानन्द प्रदातारं, सर्वानन्द विकासकम।
सर्वानन्दावितारंच सर्वानन्दं नमाम्यहम्।।
२. श्रीमान् श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ, मुकुटालंकार रूपो गुरुः।
योगः क्षेमकरः सुपूज्य चरणौ, रामेण तुल्यो गुणैः।।
संस्थाप्याश्रममुत्तमं जयपुरे, धर्म प्रचारे रतः।
सर्वानन्द यतीश्वरो विजयते, प्रेम प्रकाशे भुवि।।

*** सोलह शिक्षाऐं ***

दोहा: सोलह शिक्षायें सुनो, सुखदायक हैं जोय।
कह टेऊँ संकट कटे, देत परम गति सोय॥

1. आदि फल वीचार के तुम, कर पीछे सब काम जी।
ये वचन मन मांहि धारे, पाय सुख आराम जी॥

2. उद्यम कर शुभ कर्म कारण, सीख येही सार है।
भाग पर कछु नाहिं राखो, वेद ग्रन्थ पुकार है॥

3. समय का अति कदर करना, खोइये न कुसंग में।
जो बचे व्यवहार से, सो सफल कर सत्संग में॥

4. सर्व सेतुम गुण उठाओ, दोष दृष्टी कोहरे।
देख अवगुन आपना, जो बहुत हैं मन में भरे॥

5. सर्व जीवों से करो हित, निन्द किसकी ना करो।
ना बुरा चाहो किसी का, भाव शुद्ध हृदय धरो॥

6. जीव किस कोना दुखाओ, दया सब पर कीजिये।
राम व्यापक जान सब में, द्वेष कोहर लीजिये॥

7. समय जोई गुज़र जावे, याद ना तुम ताहिं कर।
आनेवालेवक्त की भी, चिन्त मन में नाहिं कर॥

8. जो बनावे ईश्वर तुम, ताहिं पर राज़ी रहो।
जा बनी सा है भली सब, यों सदा मुख से कहो॥

9. आपने स्वारथ लिये तुम, झूठ ना कब बोलना।
वचन साचा मधुर हो जब, तबहिं मुख को खोलना।।

10. शरण तेरी आय जोई ताहिं दे सन्मान जी।
यद्यपि वैरी होय तोभी, ना करो अपमान जी।।

11. और का उपकार कर तुम, छोड़ स्वारथ आपना
लोक पुनि परलोक में कब, होय तुम कोताप ना।

12. धर्म अपने मांहि हरदम, प्यार कर नटना नहीं।
सीस जावे जान दें पर, धर्म से हटना नहीं।।

13. मौत अपना याद कर ले, तिहं भुलावोना कभी।
जान मन में मरण का दिन, निकट आया है अभी।।

14. धर्मशाला जान जग को, जीव सब महिमान है।
मोह किस सेना करो, सब स्वप्न सम सामान है।।

15. वेद गुरु के वचन पर नित, तुम करोविश्वास जी।
अटल श्रद्धा धार मन में, भ्रम कर सब नास जी।।

16. आदि मन्तर ले गुरू से, जाप जप धर ध्यान को।
जगत बन्धन तोड़ विचरो, पाय आतम ज्ञान को।।

दोहा: ये शिक्षायें याद कर, मन में पुनि वीचार।
कह टेऊँ करनी करे, भव निधि उतरोपार।।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कृत

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे ।।ॐ।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विन सेवन का ।।स्वामी।।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।।ॐ।।
माता-पिता तुम मेरे, शरण गहँ किसकी ।। स्वामी।।
तुम बिन और न दूजा, आस केरूं जिसकी ।।ॐ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।। स्वामी।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।।ॐ।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।। स्वामी।।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।।ॐ।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।। स्वामी।।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति।।ॐ।।
दीनबन्धु दुःख हर्ता, ठाकुर तुम मेरे ।। स्वामी।।
अपने हाथ बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे ।।ॐ।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।। स्वामी।।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तनि की सेवा ।।ॐ।।
जो जगदीश की आरती, प्रेम सहित गावे ।। स्वामी।।
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वांछित फल पावे।। ॐ।।

श्री सत्यनारायण जी

आरती
श्री सत्यनारायण जी

जय लक्ष्मी रमणा श्री जय लक्ष्मी रमणा,
सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा ।। टेक।।
रतन जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे।
नरद करत निरन्तर घंटा ध्वनि बाजे ।। जय।।
प्रगट भये कलि कारण द्विज को दर्श दियो।
बूढ़ा ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो ।। जय।।
दुर्बल भील कराल इन पर कृपा करी।।
चन्द्र चूड़ एक राजा तिनकी विपती हरी ।। जय।।
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी ।।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फेर स्तुति कीनी ।। जय।।
भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरो।
श्रद्धा धारण कीनी तिनको काज सरो।। जय।।
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी।
मन वांछित फल दीना दीनदयाल हरी ।। जय।।
चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवाा ।। जय।।
श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई गावे।
कहत शिवानंद स्वामी मन वांछित फल पावे ।।जय।।

भगवान श्री झूलेलाल आरती

गावे गावे परम पद पावे, श्री अमर जिन्दा
लखी लाल रे जिन्दा, सुहिणां सेठ रे जिन्दा
दुःख लाहे मुहिंजो लाल,
सुख करे मुहिंजा लाल तेरी आरती,
सुर नर मुनि गावन लाल जिन्दा तेरी आरती।

केसर तिलक बणियो है मुकुट पर,
चुहां चन्दन लाल चढावे
श्री अमर जिन्दा .....।

सिध साध सभु तेरा यश गावन
ब्रह्मा चंवर झुलाये
श्री अमर जिन्दा .....।

आशाऊँ सब सफला कर दर्याह,
वेसाही सब सफला करी
दासन दास - मथुरा दास
चरन रज मांगे, अमर रज मांगे
श्री अमर जिन्दा .....।

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।

आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज

आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज

आरती

ॐ जय गुरु टेऊँराम, स्वामी जय गुरु टेऊँराम।।
पर उपकारी जगत उद्धारी, तुम हो पूरन काम।। ॐ ।।
जब जब प्रेमिनि निज हित कारण, तुमको पूकारा ।। स्वामी।।
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सबको निस्तारा ।। ॐ ।।
प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मंत्र साक्षी सत्नाम।। स्वामी।।
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम ।। ॐ ।।
देश विदेश में मण्डली लेकर, पावन दे उपदेश।। स्वामी।।
आत्म रूप लखाया सबको, हरिया ताप क्लेश।। ॐ ।।
पूरण अचल समाधी तेरी, सिद्ध आसन ब्राजे।। स्वामी।।
रूप मनोहर सुन्दर लोचन, देखत मन गाजे।। ॐ ।।
आत्म स्थित वचन के पूरे, योगी इन्द्रिय जती।। स्वामी।।
परम उदारी धीरज धारी, परम अगाध मती।। ॐ ।।
धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साधु सुजान।। स्वामी।।
धन वह देश जहाँ तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान।। ॐ ।।
सुर नर मुनि जन हरिजन गुनिजन, गावत गुन तुम्हरे।। स्वामी।।
अंत न पाइ सके नर कोई, महिमा अपर परे।। ॐ ।।
जो जन तुम्हरी आरति गावे, पावे सो मुक्ती।। स्वामी।।
साध संगति को हरदम दीजे, पूरण गुरु भक्ती।। ॐ ।।

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज आरती

ॐ जय गुरु सर्वानन्द, स्वामी जय गुरु सर्वानन्द।
धर्म कर्म का दे उपदेशा, काटे यम के फन्द ।। ॐ ।।
तुम हो दाता दीन दयालू, सबके हितकारी ।। स्वामी।।
शेष शारदा नित गुण गावे, महिमा अति भारी ।। ॐ ।।
तन पर चोला गेरू रंग का, सिर पे जटाधारी।। स्वामी।।
कर कमलों में लाठी सोहे, मोहे नर नारी ।। ॐ ।।
अपने गुरु के निज वचनों को, घर घर पहुंचाया।। स्वामी।।
भूले भटके दीन जनों को, सत् मार्ग लाया ।। ॐ ।।
अधम उद्धारन कष्ट निवारन, भक्तन भयहारी।। स्वामी।।
भव जल तारन पार उतारन, कारन देह धारी।। ॐ ।।
देश विदेश में भ्रमण करके, भक्ती फैलाई ।। स्वामी।।
सोऽहम् शब्द का मंत्र दे वह, ज्योती दिखलाई ।। ॐ ।।
अजर अमर और अज अविनाशी, घट घट के ज्ञाता।। स्वामी।।
कण कण में तुम सर्व व्यापक, पूरण गुरु दाता।। ॐ ।।
परम उदारी पर उपकारी, अमरापुर वासी।। स्वामी।।
शरण तुम्हारी जो जन आवे, पावे सुख रासी।। ॐ ।।
टेऊँराम के कृपा पात्र, तुम हो भक्ती भण्डार ।। स्वामी।।
गुरू भक्त बन गुरु भक्ती का, खूब किया प्रचार ।। ॐ ।।
पूरण गुरु की पूरी आरति, जो जो नर गावे ।। स्वामी।।
पाप ताप सन्ताप मिटाकर, पूरण पद पावे ।। ॐ ।।

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।

सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज

सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज आरती

ॐ जय गुरु शान्ति प्रकाश, स्वामी जय गुरु शान्ति प्रकाश।
प्रेम के सागर सत्गुरु मेरे, मन में करो निवास।। ॐ ।।
मात पिता थे धर्म के मूर्ति, उपजा पूत सपूत।। स्वामी।।
बचपन से ही मन में जागी, कृष्ण दर्श की प्यास ।। ॐ ।।
टेऊँराम के श्री चरणों में, जीवन सौंप दिया।। स्वामी।।
उनकी दया से परम पद पाया, अद्भुत किया विकास ।। ॐ ।।
वेद वाणी और गुरुवाणी का, पाया ज्ञान भण्डार।। स्वामी।।
प्रेम प्रकाश मण्डल में चमके, सूरज सम सुख रास।। ॐ ।।
देश विदेश में भ्रमण करके, सबको मोह लिया।। स्वामी।।
सत्नाम साक्षी मंत्र जपाकर, काटी यम की फास।। ॐ ।।
देश धर्म की रक्षा के हित, सब कुछ त्याग दिया।। स्वामी।।
दीन जनों की सेवा में ही, पाया परम हुलास।। ॐ ।।
एकादशी और गौ सेवा का, खूब किया प्रचार।। स्वामी।।
कण कण में श्री कृष्ण को देखा, किया भेद भ्रम नाश।। ॐ ।।
जो जो दरश करे सद्गुरु का, मन में रख विश्वास।। स्वामी।।
आशा उसकी पूरण होवे, कारज होवन रास।। ॐ ।।
पूर्ण श्रद्धा से जो प्रेमी, आरति यह गावे।। स्वामी।।
सुख सम्पति और सुमती पावे, अमरापुर हो वास।। ॐ ।।

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।

सद्गुरु स्वामी हरिदास राम जी महाराज

आरती

सद्गुरु स्वामी हरिदास राम जी महाराज

ॐ जय गुरु हरिदासराम, स्वामी जय गुरु हरिदासराम।
सत्चित आनन्द ब्रह्म स्वरूपा, सर्व सुखों के धाम ।। ॐ ।।
अमरापुर से आये जोगी, लेकर सत् सन्देश ।। स्वामी।।
अमृतवाणी सब सुख खाणी, अमर किया उपदेश।। ॐ ।।
बालापन से गुरु चरणों में, मनुवा तव लागा।। स्वामी।।
घर को त्यागा भया विरागा, सत्गुरु रंग पागा ।। ॐ ।।
सत्गुरु टेऊँराम साहब में, अटल रखा विश्वास।। स्वामी।।
सत्नाम साक्षी जाप जपाकर, प्रेम किया प्रकाश।। ॐ ।।
सद्गुरु सर्वानन्द की सेवा, तन मन से कीनी ।। स्वामी।।
पूरण गुरु की कृपा पाकर, सुरति शब्द भीनी ।। ॐ ।।
निर्मोही निर्मान नि:संगी, निर्भय निष्कामी।। स्वामी।।
निरइच्छा हो जग में विचरे, सत्गुरु सुख धामी ।। ॐ ।।
त्याग तपोमय जीवन धारे, सत्गुरु गुण गाया।। स्वामी।।
देश विदेशा सत् उपदेशा, सब को पहुँचाया ।। ॐ ।।
नभ में जल में पावक थल में, ज्योति तेरी जागे।। स्वामी।।
श्रद्धा से जो शरनी आवे, भय तांका भागे ।। ॐ ।।
प्रेम भाव हृदय में भरकर, आरति जो गावे।। स्वामी।।
सुमति प्रकाशे–सब दुख नाशे, मुक्ति पद पावे ।। ॐ ।।

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।

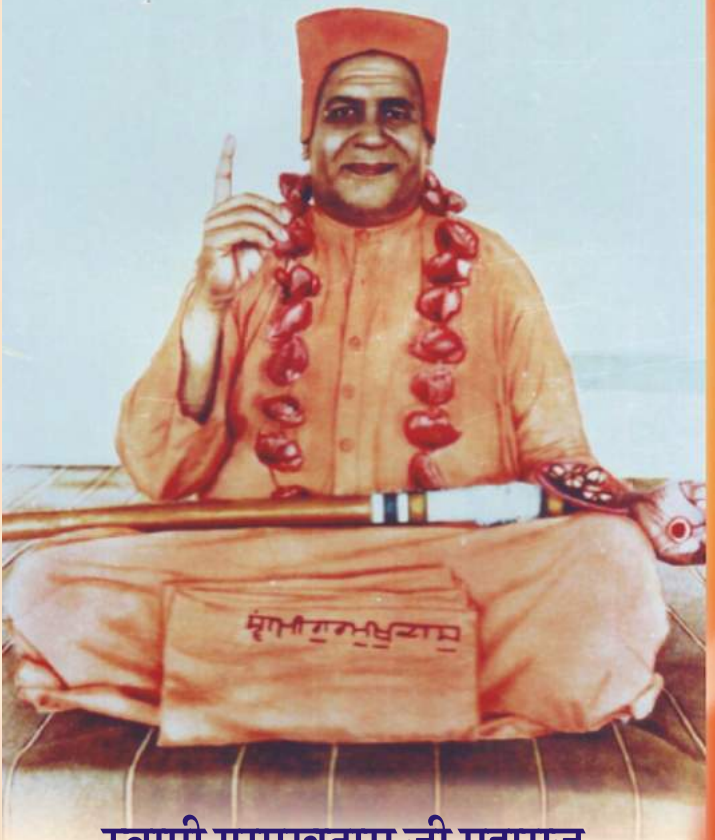

स्वामी गुरमुखदास जी महाराज

आरती
स्वामी गुरमुखदास जी महाराज

ॐ जय गुरु गुरुमुखदास, स्वामी जय गुरु गुरुमुखदास,
लीला तेरी नाथ निराली, अद्भूत वचन विलास।।ॐ।।
प्रेम प्रकाशी सब सुख रासी, गुरुमुखदास तेरा नाम।
माता ज्ञानी सब गुण खानी, गुरुवर टेऊँराम।।ॐ।।
अगुन सगुन दोऊ रूप तुम्हारे, सबके तुम आधार।
मात पिता गुरुदेव स्वामी, तुम हो पालन हार ।।ॐ।।
एक हाथ में घुंघरू बाजे, दूजे इकतारा।
सोहम् सोहम् गरजे वाणी, बरसे रस धारा ।।ॐ।।
गुरुमुख तेरा नाम निराला, संकट सब टारे।
भूत प्रेत भय निकट न आवे, जो ध्यान तेरा धारे ।।ॐ।।
ग्रह गोचर सब सुब पहुंचावे, गुरुमुख गुन गावे।
रिद्धि-सिद्धि बल बुद्धि ज्ञान विज्ञाना, नव निधि घर आवे ।।ॐ।।
चण्ड प्रचण्ड मुख मण्डल तुम्हारा, अद्भूत छवि राजे।
वीर धीर गुण ज्ञान गम्भीरा, जय जय धुनि गांजे।।ॐ।।
दण्ड कमण्डल कर कमलों में, भूमि पर शैया।
सब जीवों के मार्ग दर्शक, जल थल नभ नैया।।ॐ।।
आरत होकर आरती तेरी, जो कोई नर गावे।
भ्रम चाकर भव बन्ध तोड़कर, सहज मुक्ति पावे।।ॐ।।

छन्द

सर्व स्वरूपं आदि अनूपं, भूमि भूपं भयभाना।
अन्त न ऊपं छाय न धूपं, काढत कूपं धर ध्याना।
रहस्यारामं दायक धामं, नित निष्कामं निर्बानी।
पाद नमामं निशदिन शामं, श्री टेऊँराम गुरु ज्ञानी।
चावल चन्दन कुंगूं केसर, फूलों की वरखा बरसाओ।
नृसिंह गोमुख भेरी बाजा, तबला सुरन्दा झांझ बजाओ।
भर भर दीपक पूर्ण घी से, अगरबत्ती अरु धूप जलाओ।
आरति साज करो बहु सुन्दर, सद्गुरु की जयकार बुलाओ।

पल्लव

आशवंदी गुर तो दरि आई, तुम बिन ठौर न काई।
तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाईं।
पाइ पल्लउ मैं पेर पियादी, आयसि हेत मंझाई।
तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नामु सनेही।
नामु तुम्हारा साबुन करिसां, धोसां पाप सभेई।
कहे टेऊँ गुर लोक तीन में, आवागमन मिटाईं।

श्री अमरापुर धुनि

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम।
जय यदुनन्दन जय घनश्याम, कृष्ण मुरारी राधेश्याम।
अन्तर्यामी तेरा नाम, सबको सुमति दे सुखधाम।
अमरापुर के सुन्दर श्याम, सत्गुरु स्वामी टेऊँराम।
ज्ञान गुरु गोविन्द हरे, सत्गुरु सर्वानन्द हरे।
सत्नाम साक्षी सर्व आधार, जो सुमरे सो उतरे पार।

साक्षी शिवोऽहम् साक्षी शिवोऽहम्
सत् चित् आनन्द साक्षी शिवोऽहम्
स्वयं प्रकाशी साक्षी शिवोऽहम्
चिद् आकाशी साक्षी शिवोऽहम्
घट घट वासी साक्षी शिवोऽहम्
सर्व निवासी साक्षी शिवोऽहम्
प्रेम प्रकाशी साक्षी शिवोऽहम्
अमरापुर वासी साक्षी शिवोऽहम्
कहता टेऊँ साक्षी शिवोऽहम्
कहता स्वामी साक्षी शिवोऽहम्

ॐ शांति! शांति!! शांति!!!

!! ॐसत्नाम साक्षी !!

कष्ट हरण अष्टक

इस समय कठिन काल में इसका प्रतिदिन पाठ करने से हम सबके कष्ट दूर होंगे-
इसके लिए पूर्ण निष्ठा भाव से दृढ़ विश्वास करके इसका नित्य पाठ करें

1. जय गुरुदेवा - अलख अभेवा - अटल अखेवा - सुखधामा।।
अघ दुःखहारी - नित सुखकारी - मंगलकारी- तव नामा।।
कष्ट कटीजे - दूख हरीजे - सब सुख कीजे - अभिरामा।।
हे सर्वेश्वर - हे जगदीश्वर - सत्कामा।।
हे सर्वेश्वर - हे जगदीश्वर - सत्कामा।।

2. भो भगवन्ता - सर्व नियन्ता - मेटहु चिन्ता - भयभारी ।।
राखहु शरना - अपने चरना - जन्महिं मरना - कट जारी ।।
दीजै सुमती - हरिए कुमती - निर्मल भक्ति - दे प्यारी।।
भव जल भारा - आंहिं अपारा - तब आधारा - सद्वारी।।
भव जल भारा - आंहिं अपारा - तब आधारा - सद्वारी।।

3. सर्वस्वरूपा - अगम अनूपा - अलख अरूपा - गुरुदेवा।।
तुम पित माता - बंधु भ्राता - दीन त्राता - गुरुदेवा।।
घट घट वासी - अज अविनाशी - प्रेम प्रकाशी गुरु देवा ।।
करहुं जुहारा - बारम्बारा - हो रखवारा - गुरु देवा ।।
करहुं जुहारा - बारम्बारा - हो रखवारा - गुरु देवा ।।

4. श्री टेऊँरामं - सब सुखधामं - पूरणा कामं - नमो नमो ।।
सर्वानंदा - दे आनंदा - सद् बख्शन्दा - नमो नमो।।
शान्तिप्रकाशा - हरहु निराशा - काटहु फासा - नमो नमो ।।
हरि हरिदासा - मेटहु त्रासा - तव भरवासा - नमो नमो ।।
हरि हरिदासा - मेटहु त्रासा - तव भरवासा - नमो नमो ।।

5. सायं वन्दे – प्रातः वन्दे – क्षण क्षण वन्दे – जगत पती।।
निश में वन्दे – दिवसे वन्दे – पल-पल वन्दे – दे सुमती ।।
पुरये वन्दे – पृष्ठे वन्दे – सर्वत वन्दे – प्राणपती।।
पूरब बन्दे – पश्चिम वन्दे – दश दिश वन्दे – सर्व गती।।
पूरब बन्दे – पश्चिम वन्दे – दश दिश वन्दे – सर्व गती।।

6. नमो उदारी – पर उपकारी – कर रखवारी – दूख हरो।।
नमो उदासी – सर्व निवासी – प्रेम प्रकाशी – महर करो।।
नमो निरन्तर – परम स्वतंतर – मम उर अंतर – भक्ति भरो।।
नमो नमामी – अलख अनामी – अंतरयामी – ताप जरो।।
नमो नमामी – अलख अनामी – अंतरयामी – ताप जरो।।

7. नमो कृपाला – नमो दयाला – नमो अकाला – नमो नमो।।
नमो अनूपा – सगुण सरूपा – अगुण अरूपा – नमो नमो।।
नमो विधाता – अभय प्रदाता – सर्व ज्ञाता – नमो नमो।।
नमो अनन्ता – नमो अचिन्ता – तुम बेअन्ता – नमो नमो ।।
नमो अनन्ता – नमो अचिन्ता – तुम बेअन्ता – नमो नमो ।।

8. दैहिक रोगा – मानस शोका – कुमति कुयोगा – हर लीजे।।
जानै निज जन –हरिए अवगुण – मन में सद्गुण– भर दीजे।।
चरण कमल महिं – वृत्ति लगै तहिं – प्रीति घटै नहिं – वर दीजे।।
दूख विशाला – हर प्रतिपाला – पार कृपाला – कर लीजे।।
दूख विशाला – हर प्रतिपाला – पार कृपाला – कर लीजे।।

ॐ सत् नाम साची
श्री अमरापुर स्थान
श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य श्री १००८
सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज